

१ डाहा जागळी जग या गा दयक ॥ जळया गा स्वसिकाय, मूला हव, काय ॥ वन जागा वन, पूजाः
३ ॥ ववि या ग १ खंदी कु १ सिरु य या गा, या मिया, हा ध पूजा या य, थ ख ना वि य, गु ल रा ठा ठ र्सी व न
व ध्म य ठ य, दि ग व ध्म य ठ य, या क सि न वा य, सि ध्म न, व वि यी य का व ० य, सि ध्म न न हा ल, ली सा र्सी
दू का य ॥ ॥ य ळ कि न न स्व य, लू य ल, डा हा य ल, ग य, गु ल रा ठा ठ र्सी, व जी ह्म या ग वि य, की व न पूजा या य
थ वू मा ह्म य, अ मि कृ णु द य क था य स, क य व, डा हा य व स्व न, अ मि कृ णु द न, न व का था सा न, क व मि रु
० पूजा, द खि ना वि य, क ग न क, वि स ऊ न ॥ ॥ थं यी थी, का यी थी, अू ह्म यी थी रं पूजा ह्म य, नि म नु न

याय, गायक काल, आगमसर्पदायकायक, समययक ॥ ॥ सुमिगाधन, कीबलध्यान, कीन
गाय, वसुधावाधिवसन, लिंगाधिवसन, सुगुणागन, लजयागन, धवगाधिवसन, महावतीविश,
याक, पूजाकाय, कननक, विसजल, धवन ॥ ॥ यरुभूधिवसन, दासल, प्रगिष्ठाक, गिसाअ
दीन, वसुआदिन, गुकरुठाठ, गियक, पूजाकाय, यरुसावादूलायाव, दीगवल्गुयथ, लाक
पावपूजा, धनसूयार्थयाय, गुचुरठाठ, आसनसविशाय ॥ गुचुमलुल, धयुवि, वंगयका, मलुच
धिवसन, अग्निष्ठायन, दिगवा० गाय, अग्नाकृनि, कानाकृनि, धवगाकृनि, धनकाव, धवयनि

अग्निष्ठायन

499

सुद्धसूरु, धनदगक्रियायाय, कावास्यायका, धूर्लकृनि, महावलिवीय, कननक, धवगायक, अ
गिचोद, धनधवयनिष्ठा ॥ ॥ वागीया ॥ धनवर्ना, दिगवल्गु, दिग, धूर्व, दक्षिण, यद्धीम, उगु, धूर्गाण,
अग्नि, नलग, वायुध, दिगयूजा, आसनसविशकाव, गावयूजायाय, गालकाय ॥ नृयगीगसहिगन,
क्रिया आलकृयाय, धूर्ववगु, यरुआलर ॥ धवगाकृनि, धनकाव ॥ वल्गावर्नयाय, वेदसहीवरी
विश ॥ आगामूलमलुल, दीसठिवलि, वल्गाकृनियाय ॥ नागिवाल, धकिसर्पकाव, उद्धदवावन, ल
भास्यक ॥ नालिकाल ॥ दूर्गेनियलिसाधनयाय ॥ खगुमूजा ॥ यश्चआगीनीगावन ॥ पूजायाय ॥ सि

धूलभाहनीन गवर्क ॥ यश्च धालालवक्ताय ॥ गिलाहूगियाय ॥ स्वकिवाकनरुलालय ॥ मासाहूगि
 नादायाव यश्च धालालयक ॥ धूनकाव ॥ यश्च धालालवक्तायाव हाक ॥ यश्च साविदय ॥ मासाहूगि
 य ॥ यश्च सालिहीलक ॥ धूनकाव, दूकायाव, धाथसंग ॥ ॥ धर्नयश्च धालालयक वयनि, सिद्ध
 गिहूयाय ॥ धूधूहूगियाय ॥ माहावलिविय, कर्मनक सकली, दक्षिणा ॥ आगिर्वाद्यविय, विसर्ज
 न, यश्च दाकिणीरुका ॥ धर्नगणयक याय, समयन ॥ वलिगयक मालमालझाय ॥ धर्नलागीया
 कील्ला ॥ ॥ सागीकूकू ॥ दीगवल्मयलथ ॥ लाकपालयूजायाय, सूर्योद्ययाय, असनसथाका

व, कीयालीशयाय ॥ यक्षयाय, य० माहूगि, लानाहूगी, धर्वगाहूगी, धूधूहूगी, दसवलिविय ॥ दवा
 गुलगा० यलथ ॥ यश्च धालालयकाव, धूनकाव ॥ कर्मनक, दक्षिणा, सग्वन, कृशाशिकक ॥ जल
 सिवलिल्लाय, लाकपालविसर्जणयाय ॥ आसिर्वाद्य ॥ मणुललायनयाय, कमालिजागाद्येण, कमा
 लियूजा ॥ धर्नजागुल, गनवकवलिविय ॥ भर्गयूजा, ड० रणधनरथा ॥ शुभममु ॥ ॥
 धूर्वेया, लू ॥ दक्षिणया, ना ॥ यक्षिमया, डाहा ॥ डगलया, कंग ॥ ॥ सानया, झल ॥ जूनीया, सिङ
 ल ॥ नलथया, कागल्लाह ॥ वायवया, लील ॥ धर्नवलिसधून्य ॥ ॥ भालूक ॥ दगकन ॥ गुलाशः

॥ गुच्छला ॥ छाया ॥ ललिक ॥ जिह्वली ॥ कालात्रा ॥ खालधाल ॥ चूली ॥ धूम्र जिगा ॥ १० दगयायू कंगार
 लिमछाय ॥ ॥ पूर्वयागकिनीधवी ॥ ककुल ॥ ककुल ॥ गिजा ॥ गीखद ॥ द्विकुम ॥ धर्मगुगय
 धाय ॥ ॥ उगलया लामाधवी ॥ खयल ॥ गमलस्य ॥ साध्या ॥ धर्मकखाय धाय ॥ ॥ यद्धिमया ॥ ख
 गुलाहाधवी ॥ दूदू धाला ॥ ॥ दखिनया ॥ नूयीनीधवी ॥ ह्री ॥ धाला ॥ ॥ दाखया ॥ वक्रवालाही ३
 धवी ॥ धधाला ॥ ॥ लाथाय ॥ १०८ कागदयकाव ॥ कालयीचक्रहाल धूम्रुन ॥ यक्षपाग लवहा
 य यक्षसालि जायाव जयं जयं वाहलि चक्रहाल ॥ ॥ पूर्वया क्षीण नीलवज्र यण धका यक्षः

सूगय ॥ १ ॥ वृणानया क्षीण वक्रवन धका यक्षगव ॥ २ ॥ उरुलया क्षीण वन विश्ववज्र धका
 डाखदि ॥ ३ ॥ यद्धिमया क्षीण यक्षविन धका यक्षमृग ॥ ४ ॥ दक्षिनया वनवन क्षीणया धका रु
 लीदिनया ॥ ५ ॥ वायूवाया क्षीण वन द्विधाल धका निर्यास कनकि खानया ववन ॥ ६ ॥ नमृग
 कोनया क्षीण वन अंकुस धका यक्षवलकल ॥ ७ ॥ अग्निया लाग्या वन क्षीणया धका अंवल न
 या धका ॥ ८ ॥ दागया पीगवक्रवन क्षीण गीणायाय ॥ ९ ॥ पूर्वया वक्रक्षीण मूलक्षीण दक्षिण
 उमक्षीण यद्धिमया वलनक्षीण उरुलया कवलक्षीण वृणानया गिगुल अग्नीया गुवायान नखया

खठ्वायूया, यगाय, उद्धया, कथाल, धनक्राग, चक्र, सुख, धनक्रागलकावकावग, ॥ अर्द्धद्वालस, यि ३
 धिविधवगा, कृगधल, नाग, अगुल, जव, खन, कावक ॥ धनक्रागवाय ॥ ॥ कृगशुगीधन ॥ वलीगगः
 सिंयारुल, वलिसिंयारुल, दिलागसिंयारुल, दूवीलसिंयारुल, अविंयारुल, धनयश्वलक
 ॥ कव ॥ भायूवराव, द्वादशव, लिर्कण्ठकिली, दूर्कण्ठकिली, अयलाधिसान, धनडावधि ॥ मगी, य
 ल, भावग, ल, डाहा, धन, यश्वल ॥ मागळा, गळा, खानवा, मास, कामल, धन, यश्व, वही ॥ ककुली,
 कदूल, श्रवण, गिल, कीकम, धन, यश्वगुगध ॥ धल, साखल, कसी, धलि, दूद, धन, यश्वमृग ॥ गाम

गु, गोमय, गोदध, गोदधि, गोदृग, धन, यश्वगर्वा ॥ गाय, अक्राग, एका, युका, शायमल, धन, यश्वगिः
 द्वाध ॥ यश्वगुकायठ, धन, कृगशुगि ॥ ॥ रुल, यद्वलाग, अयनील, धदाल, धल, यद्वलाग, कृकः
 गन, लावग, मगी, धन, नववन्न ॥ ॥

१ॐ नमः ४ श्री चक्रसम्बन्धाय ॥ श्री रुद्राय नमः ५ मम कृपा धिक् पिता १ चतुर्विंशति संसृष्टा चतुर्व
 काय नमः ४ ॥ १ ॥ सर्वो काल गिका वाणी दृष्टि शुद्धा गिरुद्ध १ द्विष न्यु गिरुद्धा दाना शुद्धा द
 दग वा रुद्र ॥ २ ॥ अय गिरुद्ध गिरुद्धा गिरुद्धा साधना रुद्र शुद्धि गिरुद्धा लीलाय च वला धरुद्धा लीलाय च
 वच चिक् ॥ ३ ॥ सर्वे उग रुद्रा शुद्धा आलीला उग रुद्रा नमः ४ यश्च रुद्रा न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न
 थ ॥ ४ ॥ यश्च रुद्रा न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न
 ॥ ५ ॥ यश्च रुद्रा न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न
 ॥ ६ ॥ यश्च रुद्रा न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न

यवा क्रिर्दामाना शय यत्र शुद्धा लिनी रावा राव विकल्पा र्थ शुद्धा र्थ कर्त्तव्य नय ॥ १ ॥ गिरु
 वा फार्थि नक्रुग शय शुद्धा गिरुद्धा लिनी वा धि विरु विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न
 क्लान स्य वधार्थ नमः ४ या स रुद्र सदा कृपा गा गुरव साधु र्ण चक्र युक् कया लिनी ॥ २ ॥ समरु क
 ल्या ना शुद्धा विमूक्ति यद शुद्धि गिरुद्धा लीलाय च वला धरुद्धा लीलाय च वला धरुद्धा लीलाय च वला धरुद्धा
 मयी वक्र माला गिरुद्धा लिनी समुधि गला धर्माय कया ल गिरुद्धा लिनी ॥ ३ ॥ गिरुद्धा लिनी
 शुद्धा चक्र संवत्सराय न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न विष्टु दृष्टी चक्र संवत्सराय न

मयूषात्वा, ऊठमकूटधात्रिर्न। चतुमालविनासार्थं, दंष्ट्राकलालरीमर्षी ॥ १३ ॥ मिथ्यादृष्टि
 यरुनार्थं, विष्टिनास्यायननमः। ध्यानयुक्तविष्टिदत्ता, दृष्टदवात्रनत्रयि ॥ १४ ॥ कयाशुन्य
 गयावका, वावाकालिगिर्ननमः। मरुवागविष्टिदत्ता, भारुयवागशुद्धिग ॥ १५ ॥ व्याः
 क्षुजिनाययधक्षग, स्वत्रवर्णाविष्टिद्विगः। अलिकालिविष्टिद्विद्या, कृगाद्वत्रुशुमालिर्न ॥
 ॥ १६ ॥ शुद्धासर्वेगत्रीत्रय, रसधूसत्रनमः। गावसफक्कृष्टेद्वि, वृथसमाशिलिखन ॥ १
 ॥ १७ ॥ गीगित्रसागलन्याम, विष्टिद्विर्नकृकनथा। कृष्टेकृष्टशुभमक, ननलाकामुष्टवृक ॥ १८ ॥
 ॥ ॥ निष्टीसम्वत्रस्यविष्टिद्वि ॥ ॥

१। गार्कन्यानीयगनीदधिरुलकसुमीयावकादीयमाना, यानिद्वगुययुक्तं नृयनिवधयुर्नयुक्तं क
 कृ। द्विष्टि १३। द्विष्टिकावैवधुधीजलचलगर्लसिद्धिमर्नगनाय, वृष्ट्याशुमीमासरात्रादिमयिवच
 नयुष्टिगानां युगैस्त ॥ ॥ यस्तानयादवात्, धर्मनायालाकशिठशिष्ट, गा, कन्या, गीय, रलीध
 ली, दूदू४, स्यासावसा, खान, भक्तास्यथाक, मगा, वध, कृष्ट, चयिकृणा, वाजा, वधसदकाव, वव, दाक
 धत्रय, वाकृणा, वाकृदूयाववव, दाभर्क, थाक, जाथाकावथाक, वस्यामिसा, वाकृविळावकृव, रि
 कशिठ, मंगल, धर्मयाखकायाव, थाक ॥ धर्मनायात्रागसाशिठकृथा ॥ ॥ मर्कनिलाशिष्टिकीरु

उगमयिमुखीमुक्ककगश्वनग्रं पुवर्षिहिनना
कुम्भस्वशिमुखकलहंकाष्टरात्रकृष्टा, पु
॥ ॥ पुष्पनयाठवाल, धननायालाः
ठाठखाल, वि, साखालानमयाव, वव, न
न, व्याकवसगमनियाव, वव, कायवाव, यं
ननायात्राकमशिठ, सियरुव, कार्यमसि

गंजठमकूठधनत्रकपूष्यादत्रर्षि, १८ लमर्षिगुन
सुभयस्तिनानायदिनमनर्षिनेवसिद्धिर्नना
नसामशीठरुल ॥ वाठवा, वकनक, विथ्या
कखायाग, कासयठामनूख, इठठव, कादूखा
ठधनर्षि, लाठाववाठ, सिंकविठाव, वव, थ
धयीव ॥ ॥ शुश ॥ ॥